खण्ड 1:
देह धारण करने से पूर्व

यीशु को लोग पृथ्वी पर उसकी सेवकाई के नज़रिये से देखते हैं। जिब्राइल स्वर्ग दूत द्वारा की गई घोषणा हमें याद दिलाती है कि इस बालक का जन्म सामान्य बालक की तरह नहीं था। उसके जन्म के साथ यह शुभ समाचार भी था कि परमेश्वर का मसायाह आ चुका है। यह परमेश्वर की स्तुति और महिमा का समय था। उसके जन्म के समय के आस-पास होने वाली सभी बातें ध्यान में आती हैं।

यह वह समय था जब बुद्धिमान लोगों ने आकर अपने से बुद्धिमान को नमन किया था। उसके लड़कपन की एक झलक हम पर उसकी सहज बुद्धि को प्रकट करती है जब उसने मन्दिर में अपने प्रश्नों व उत्तरों से यहूदी धर्म के विशेषज्ञों को चकित कर दिया था। बालकपन से पुरुष बनने तक के उसके मानवीय विकास के संक्षिप्त कथन में उसकी बुद्धि और परमेश्वर तथा मनुष्यों के अनुग्रह की बात पर ज़ोर दिया गया है।[1]

क्या यीशु की बुद्धि को दिए जाने वाले इस महत्व के अर्थों पर हमने कभी मनन किया है? क्या हमने उसकी गूढ़ अन्तरदृष्टि को समझा है जब उसने अपनी व्यक्तिगत सेवकाई के आरम्भ में कहा था कि उसका बपतिस्मा ''*सब* धार्मिकता को पूरा करने'' के लिए है? क्या हमने ध्यान दिया है कि शैतान द्वारा ली गई सभी परीक्षाओं में स्थिर रहने का उसका ढंग तथा उसकी योग्यता उसके अद्‌भुत ज्ञान तथा परमेश्वर के वचनों का तुरन्त उपयोग करने के कारण थी? क्या हम उस उच्च बुद्धि से, अर्थात मानवीय सोच से ऊपर वाली बुद्धि जिसे यीशु के ''पहाड़ी उपदेश'' कहते हैं, चकित होते हैं? निस्संदेह हम उस पर आश्चर्य करते हैं! यीशु की बुद्धि की चमक उसके प्रत्येक शब्द, कार्य तथा व्यवहार में मिलती है।

यीशु द्वारा बुद्धि का यह प्रदर्शन अवश्यंभावी था। क्या पानी को गीला होने से रोका जा सकता है? क्या आग को गरम होने से रोका जा सकता? क्या परमेश्वर को बुद्धिमान होने से रोका जा सकता है? निस्संदेह, इन प्रश्नों का उत्तर है ''*नहीं!*'' गीला होना पानी का स्वभाव है और गरम होना आग का। परमेश्वर का स्वभाव बुद्धिमान होना है। पूरे अनन्तकाल व समय में, परमेश्वर ने न तो मूर्खता का कोई काम किया और न ही मूर्खता की बात।

त्रिएक पर अपना अध्ययन जारी रखते हुए, हम देखेंगे कि यीशु, अर्थात परमेश्वर पुत्र ने किस प्रकार से हमारे संसार में अपने जन्म से पहले भी पिता की बुद्धि तथा सामर्थ को दिखाया था।

पाद टिप्पणियां

[1]यीशु के जीवन से सम्बन्धित कथन के लिए ये आयतें हैं: मत्ती 2:1, 2, 11; 3:13-15; 4:1-11; लूका 1:19; 2:11, 13, 14, 42-47, 49, 52।